भजन

सखियावा घर सब से न्यारा, जहँ पूरन पुरुष हमारा।।टेक।।
जहँ नहिँ सुख दुख साच झूठ नहिँ, पाप न पुन्न पसारा।
नहि दिन रैन चन्द नहिँ सूरज, बिना जाति उँजियारा।।1।।
नहिँ तहँ ज्ञान ध्यान नहिँ जप तप, बेद कितेब न बानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब उहाँ हिरानी।।2।।
धर नहिँ अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रहमंड कछु नाहीं।
पाँच तत्व गुन तीन नहीं तहँ, साखी सब्द न ताहीं।।3।।
मूल न फूल बेलि नहिँ बीजा, बिना वृच्छ फल सोहे।
ओहम् सोहं अर्ध उर्ध नहिँ, स्वासा लेख न कोहै।।4।।
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिँ सूच्छम अस्थूलं।
नहिं अच्छर नहिँ अविगत भाई, ये सब जग के भूलं।।4।।
जहाँ पुरुष तहाँ कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखे जो कोई, पावै पद निरबाना।।6।।

कहौं उस देस की बतियाँ, जहाँ नहिँ होत दिन रतिया।।1।।
नहीं रबि चन्द्र औ तारा, नहीं उँजियार अँधियारा।।2।।
नहीँ तहँ पवन औ पानी, गये वहि देस जिन जानी।।3।।
नहीं तहँ धरनि आकासा, करै कोइ संत तहँ बासा।।4।।
उहाँ गम काल की नाहीं, तहाँ नहिँ धूप औ छाहीं।।5।।
न जोगी जोग से ध्यावै, न तपसी देह जरवावे।।6।।
सहज मैं ध्यान से पावै, सुरति का खेल जेहि आवै।।7।।
सोहंगम नाद नहिं भाई, न बाजै संख सहनाई।।8।।
निहच्छर जाप तहँ जापै, उठत धुन सुन्न से आपै।।9।।
मँदिर में दीप बहु बारी, नयन बिनु भई अँधियारी।।10।।
कबीरा देस है न्यारा, लखै कोइ नाम का प्यारा।।11।।

साधो भाई निजस्वरूप निरवाणी।
अगम निगम कोई पार न पावै, आतम ज्ञानी जाणी।।टेक।।
आतम अनंत अखै सुध चेतन, नहीं वार नहीं पारा।
धरमाधरम अधरम न वामें, आपोई आप अपारा।।1।।
आदि अरु अन्त मध्य नहीं वाको, नहीं कोई भूल सयांणा।
उरै परै ऊंचा नहीं नीचा, नित चेतन निरवाणा।।2।।
वा नहीं करम उपासन ज्ञानां, नहीं कोई जाप अजापा।
देश काल वस्तु गुण नाहीं, नहीं कोई थाप उथापा।।3।।
सगुण निरगुण भाव न ज्यामैं, नहीं अकार निराकारा।
ज्यां नहीं प्रोक्ष नहीं अपरोक्ष नहीं कोई मिल्या न न्यारा।।4।।
हेती अरु नेती नहीं ज्यामैं, दोऊं वचनकी हाणी।
बनानाथ आपकी सोजी, चेतन आप पिछाणी।।5।।

साधो भाई गुणा अतीत अविनासी।
आवै नहीं जावै वधै नहीं बिखरै, निरमल स्वतः प्रकाशी।।
टेक।।
ब्रह्म सदा निरबंधन कहिये, नहीं कोई इष्ट उपासी।
धरम करमका करता नाहीं, है अक्रिय अविनाशी।।1।।
अक्रिय सोई आप स्वरूपी, क्रिया मायापासी।
मायाकर दुरमतमें देखें, जां लग आसी जासी।।2।।
तीन गुणां का सकल पसारा, उतपति थिति विनासी।
तिरगुण में निरगुण निरबंधण, रहता आप अनासी।।3।।
आप अखण्ड खण्ड सब माया, कर निरणै कहै दाखी।
बनानाथ ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म है, अगम निगम यूं भाखी।।4।।

साधो भाई यहै निज ज्ञान हमारा।
ध्याता ध्येय ध्यानमें नाहीं, जांणै जाणनहारा।।टेक।।
अगम निगम वाणी नहीं खाणी, नही आकार निराकारा।
आपोई आप अनादी केवल, हुआ न कोउ होवणहारा।।1।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाहीं, नहीं तिरगुण विसतारा।
चवदै लोक वहां कछु नाहीं, ना कोई विषे हंकारा।।2।।
वो तो लय विक्षेपता नाहीं, नहीं कोई सार असारा।
नहीं कोई भूला नहीं समजणा, नित चेतन निरधारा।।3।।
निरालंब निरभे निरवाणी, हूँ तूं नहीं विकारा।
बनानाथ सनातन आतम, सुध अद्वैत अपारा।।4।।

साधो भाई ! निर्गुण का पद झीना ।
सतगुरु साधन की लख युक्ति, लखे संत परवीना। टेक ।
इन्द्रियां खोज सके नहीं कबहूं, दृष्टि मुष्ठ ते हीना।
मनवाणी गम कर कर थाके, जप तप प्रपंच किन्हा।।1।।
पक्षी पंथ मीन का मारग, या विधि लक्षण लीना।
निश्चय जान परम पद गहिया, रहया नहीं गुण तीना।।2।।
सब में सत्ता सकल से न्यारा, रमझ समझ कर चिन्हा।
आपा उलट समाया अपना, द्वैत भ्रम से क्षीना।।3।।
बोध स्वरूप अनामी चेतन, निरवाणी सुख भीना।
'रामप्रकाश' अचल धन साक्षी, निज केवल मद छीना।।4।।

साधो भाई ! बेगम नगर दिवाना।
देश दिवाना पावे कोई, छूटे आना जाना।।टेक।।
धरना अधर अचल नहीं चलता, महरम का अनुमाना।

षट् प्रमाण का लेखा नाहीं, वाणी चार विलाना।।1।।
ज्ञानी पहुंचे नगर बसावे, अपने में गलताना।
शुन्य शहर में अक्षय सेज पर, मौजी मौज मस्ताना।।2।।
गम बिन गाम अगम नहीं निगमा, बेगम बेगम माना।
सबका स्वामी आप अनामी, व्यापक सो अधिष्ठाना।।3।।
सब में पूरण सत्ता समानी, दृश्य द्वैत मिटाना।
'रामप्रकाश' एक रस केवल, निज में निज समाना।।4।।

अवधू सहसदल अब देख।
सेत रंग जहँ पैखरो छवि अग्र डोर विसेख।।1।।
अमृत वर्षा होत अति झरि तेज़ पुंज प्रकास।
नाद अनहद बजत अद्भुत महा ब्रह्म विलास ।।2।।
घंट किंकिनि मुरलि वाजै संख" धुनि मन मान।
ताल' भेरि मृदंग वाजत सिंधु गरजन जान।।3।।
काल की जहँ पहुँच नाहीं अमर पदवी पाव।
जीति आठौ सिद्धि ठाढ़ी गगन मद्धे आव।।4।।
करै गुरु परताप करनी जाय पहुँचे सोय।
चरनदास सुकदेव किरपा जीव ब्रह्मे होय।।5।।

सोई तत ! अपना आप सत जोई।
नित निर्गुण सत चेतन आनन्द, ज्ञान ध्यान गम खोई।।टेक।।
तीन काल नहीं माया बंधन, जनम न मरणा होई।
षट् विकार पच कोश अतीता, देह न कारण गोई।।1।।
अविद्या जीव ईश नहीं माया, चिदाभास नहीं पोई।
आदि ना अंत ना ख्याली, करण क्रिया नहीं दोई।।2।।
अनुलोम प्रतिलोम न होता, शुन बिन तत सत सोई।

अचल, सनातन सो ब्रह्म आदू, आप सदा अनुभोई।।3।।
नाम न रूप वाणी नहीं खाणी, दृष्टा दृश्य नहीं कोई।
'रामप्रकाश' अनामी पूरण, एक अखण्ड निरभोई।।4।।

बेगम पद का भेद अलेदा, बेगम असैन मिलाय।
बेगम ढूँढण चली सुहागण, आप ही रही विलाय।।टेक।।
बेगम बेगम सभी कहत है, बेगम कह्यो नहीं जाय।।
बेगम की गम कैसे लीनी, बेगम अगम अथाय।।
परा पश्यन्ती मध्यमा वैखरी, बेगम शब्दां में नाय।।
जो कोई नभ की रेश लखी है, अविचल बेगम अचाय।।
बेगम पद कथणी में नाही, सारा ही शब्द थकाय।।
कहता है सो है भी नाही, ज्यूँ गूँगा गुड़ खाय।।
नाम रूप "ईसर" भी नाही, सत बेगम अचलाय।।

साधो भाई ! बेगम देश घर मेरा।
बेगम है कोई गम नहीं पावे, गुरु मुख ज्ञानी लखेरा।।टेक।।
धर्मराय का वहां नहीं लेखा, ये उरला व्यवहारा।
स्वर्ग नर्क दोनों को तोड़ा, नहीं कोई काल विचारा।।1।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, नहीं कोई शक्ति पसारा।
बन्ध मुक्त भ्रम गढ ढायो, नहीं कोई वेद उचारा।।2।।
जीव ईश माया ब्रह्म नाहीं, नही कोई दश अवतारा।
सगुण निर्गुण वहां नहीं कहिये, नहीं करणी करतारा।।3।।
"ईसरराम" गुरु समर्थ स्वामी, परमधाम परसारा।
"पूसाराम" बेगम सत बेगम, अविचल अमर अपारा।।4।।

बंगला चौदह लोक पर देख, जाके रंग रूप नहीं रेख।।टेक।।
नहीं कोई पांच भूत का बंगला, नहीं कोई त्रिगुण धेक।
तुरियातीत कुदरती बंगला, तामे मीन न मेख।।2।।
बंगला अधर अगम से आगा, निरमाया निरलेप।
कोटिक भानु प्रकाश उन्हीं का घट घट ज्योति जगेक।।3।।
अक्षय शुन बिच चेतन बंगला, अवरण अखण्ड अदेख।
समझ बुद्धि निश्चय लख पहुंचे, बिना नैणा से देख।।3।।
अचरज खेल अलोकी बंगला, ता बंध मुक्त नहीं टेक।
ना कोई अगम निगम की बातां, ज्यूं गूंगा स्वप्न अनेक।।4।।
गुरु " सुखराम " मिल्या सत बंगला, अविचल अमर अलेख।
"ईसरराम" अनादू बंगला, निज मुख रहिया पेख।।5।।

साधो भाई ! हरिजन हरि का प्यारा।
आठों पहर लीन उन मांही, जन्म मरण से न्यारा।।टेक।।
पारब्रह्म का खेल अनन्तों, जड़ चेतन इक सारा।
नदी नाला मिल्या सिंधु में, कौन कहे जल न्यारा।।1।।
घर बिन बास बास बिन बस्ती, युग बिन योग अपारा।
ओ रावलियो सब घट व्यापक, निगह कियां उर न्यारा।।2।।
जल वायु धर नहीं आकाशा, शशि सूर नहीं तारा।
अकल अरूपी देश दिवाना, परस्या जिन हलकारा।।3।।
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, पलट्या हंस अपारा।
'ईसरराम" आदि का स्वामी, अखै अमर घर धारा।।4।।

साधो भाई ! है चेतन निरवाणी।
अपना आप अपार परमानन्द, अखण्ड सुजात अबाणी।।
जगत विकार भास नहिं कोई, सर्व अध्यास विलाणी।
संख्या सूचि मेरु पताका, नाम, रु रूप विलानी।।1।।

कर्म उपासन भरम रू भ्रांति, संशय सन्देह कहाणी।
द्वैत अद्वैत आप नही अपना भई सर्व की हानि।।2।।
तूला मूला भाव संसारा, दृश्य जगत चव खानि।
सब से न्यारा सब में पूरण, निःअक्षर परमाणी।।3।।
'उतमराम' गुरू मय चेला, नही कोई खैचा तानी।
'रामप्रकाश' सोई ब्रह्म आदि अपना आद पिछाणी।।4।।

साधो भाई ! अगम पन्थ दुहेला।
भेद अभेद भेद से न्यारा, समझ्या सैन लखेला।।टेक।।
बंका राह वैराग्य ज्ञान का, पग तां नहीं ढबेला।
जत मत योग शूरवां साजे, सो जन पार लंघेला।।1।।
व्याकुल भया शुद्ध बुद्ध ना तनकी, लग्या शब्द का सैला।
घायल होय फिरत जग मांही, जीवत मौत मरेला।।2।।
धर बिन धाम चरण बिन सेवा, कर बिन दण्डोत करेला।
लग रही तार अक्षय शुन मांही, सदा आनन्द में रहेला।।3।।
धन "सुखराम" मिल्या गुरु पूरा, बिन मुख बात कहेला।
निः अक्षर नैनों बिन निरख्या, "ईसर" बेअंग खेला।।4।।

साधो भाई ! निज अनुभव गम आनी।
अपना चेतन आप पिछाण्या, भई त्रिगुण की हाणी।।टेक।।
निज मैं निज और नही दरशे, अविद्या नही चव खाणी।
मन की गम दम नाही पहुंचे, थक गई चारों वाणी।।1।।
तीन अवस्था कोश न पांचों, सबकी थाह विलानी।
द्वैत अद्वैत भास प्रति भासा, जीव ईश नही जानी।।2।।
जाननहार सदा शुद्ध चेतन, निज को निज पिछाणी।
योग न योगी भोग न भोगी, पांचो तत्व मिटानी।।3।।
अनुलोम प्रतिलोम थकाया, ज्ञान ध्यान निरवाणी।
'रामप्रकाश' अहं ब्रह्म चेतन, प्रभा प्रकाश प्रबाणी।।4।।

आपा सोई ! सत का सत दरशाया।
सत बिना तत और नहीं रंचक, सत को सत परखाया।।टेक।।
सत सुख परम चिदानन्द पूरण, अनव्य अटल अजाजा।
अचल सनातन है नहीं नाहीं, अखण्ड अगोचर राया।।1।।
नाम व रूप रंग नहीं कर्मा, पिण्ड ब्रह्मण्ड नहीं काया ।
चार वाणी खाणी खेचर, ज्ञय ज्ञाता नहीं गाया।।2।।
ध्य ध्याता नहीं ध्यान धर्म ना, सत असत निरमाया।
एक नहीं पल दीघ न विपला, कहण अवण ढाया।।3।।
निज का निज सो अपना आपा तत्व कटस्थ समाया।
'रामप्रकाश' सोई सत सोई, अधिष्ठाना निरदाया।।4।।

असल निज सार की भाई साधु, सतगुरु सेन बताय,
सुरता शब्द विचार नुरत घर, पहरा दीना,
पाँच पचीस ने मार, अगम का मार्ग लीना,
अब जागो जागण देश में, निर्भय गहरे रे निशान,
सात द्वीप नव खण्ड में रे, नही शशि नही भान,
असल निज सार की भाई साधु, सतगुरु सेंन बताय।।1।।
अब घटा चढ़ि घनघोर, बरसे कोई अम्रत धारा,
पीवे संत सुजान हरि का, हरि जन प्यारा,
जन्म मरण आवे नही, आवा गमन मिट जाय,
अटल धाम पर जा टिके रे, संत अमर हो जाय,
असल निज सार की भाई साधु, सतगुरु सेंन बताय।।2।।
कैसा ये देश गुरु का, ऐसा कहिये,
नही शशि नही भान, वहां पर होत उजाला,
नही शशि नही भान, उजाला घट माय,
मेहर हुई गुरुदेव की रे, कर लिया रे बखान,

असल निज सार की भाई साधु, सतगुरु सेंन बताय।।3।।
सतगुरुसा सुखदास, नवलगुरु ब्रह्म समाना,
बैठा आसन ढाल, मुगत का देने वाला,
शरण कमल के मायने, बोले ब्रह्म समाय,
बाहुबल तेरा टाल दी, अगम निगम है अपार,
असल निज सार की भाई साधु, सतगुरु सेंन बताय ।। 4 ।।

साधो भाई ! निज आतम दीदारा।
आय न जाय सदा भरपूरा, सतचित रूप अपारा।।टेक।।
आप अनामी सदा अरूपा, अचल अखण्ड निरधारा।
रञ्च प्रपंच कलेश कला ना, द्वंद नहीं व्यवहारा।।1।।
पांच तीन का खेल न भासे, नांहि जगत पसारा।
सदा असंगी आइम अपेची, बंध मुक्ति नहीं धारा।।2।।
कर्म रु विकर्म ज्ञान अज्ञाना, नहीं एक विस्तारा।
विधि निषेध एक नहीं मोमे, नाहि विश्व अवतारा।।3।।
कर्ता अकर्ता अपेक्षा नाहि, नाम रूप मन हारा।
दृष्य दृष्टा बिन आदू केवल, नहीं हल्का नहीं भारा।।4।।
वचनातीत वाणी नहीं खानी, नाहीं क्रिया विकारा।
पण्डित मूर्ख द्वैत न दरशे, सच्चिदानन्द निस्तारा।।5।।
सदा अलागी सब में व्यापक, सब ही एक विचारा।
'रामप्रकाश' अपेचो अनव्य, भरया एकरस प्यारा।।6।।

सतगुरु से गुरु गम पायके, निज पाया पद निरवाना।।टेक।।
अनंत युगों का सूता जाज्ञा, जगत जाल से उठकर भाज्ञा।
भाव उलट साधन संग लाज्ञा, तज योग भोग दुखदाय के।।
निज पाया ज्ञान दिवाना।।1।।

त्रिगुण फंदा निर्भय तोड़ा। जीवात्मा को निज में जोड़ा।
चौरासी का काटया फोड़ा जनम रू मरण मिटाय के।।
निज हुआ असल मस्ताना।।2।।
फिकर फाक के लीवी फकीरी, परमानन्द की पाय जागीरी।
फूल फकर की बेहद नजीरा, सब हूं तूं द्वौत विलाय के।।
निज आप मांही गलताना।।3।।
जीव ईश का काट्या शंका अगम निगम पर लागा डंका।
सदा निशंका महारण बंका संत 'रामप्रकाश' समाय के।।
निज बूंद में सिंधु उलटाना।।4।।

साधो भाई! सतगुरू तार लियोरी।
सतगुरू मुझमें, मैं सतगुरू में, ज्यों जल विच तरंग
थयोरी।।टेक।।
जाज्ञा भाग पूर्वला संचित, समर्थ हाथ धरयोरी।
ऐसा हीर धणी बिन सूना, जवहरि लूट रह्योरी।।1।।
भूल भूल में केता कण खोया, अब के जाग रह्योरी।
उडि मोरी नींद स्वप्न में चेत्यो, गुरु गम सैल भयोरी।।2।।
अकल अरूपी ब्रह्म अखण्डी, खोजत आनन्द भयोरी।
कट्या कर्म भ्रम सब भागा, भवसिंधु पार कियोरी।।3।।
धन" सुखराम " मिल्या गुरु पूरा, म्हाने केवल ज्ञान दियोरी।
"ईसरराम" खेल ख्याली का, बेरंग निरख रह्योरी।।4।।

सत सुमरण में चित लागा, यम दूर अगाड़ी भागा।
म्हाने मिलग्या सतगुरु ऐसा, सत दिया ज्ञान उपदेशा।।टेक।।
सतगुरु शब्द सुणाया वा दिन से भजन समाया।।1।।
छोड़ी जगत की आसा, सन्तों में लिया निवासा।।2।।
मोह की नींद उडाई, भक्ति में जीव जगाई।।3।।

अखै देश घर न्यारा, जहाँ सत स्थान हमारा।।4।।
धन "सुखराम" गुरु पूरा, मैं सन्मुख रह्या हजूरा।।5।।
सत "ईसरराम" गुण गाया, सतसंग से परम पद पाया।।6।।

गुरुजी री गुञ्ज शिष्य ने लीनी, दिया ज्ञान विचारा।
ज्ञान वैराग गाढ़ा धर उर में, भव जल उतरया पारा।।टेक।।
सत की पाल युक्ति कर बांधी, टूटा विषय अचारा।
पाया भेद अनादू दरस्या, सत चित आनन्द अपारा।।1।।
आनन्द तीन युगति कर जोया, नाम रूप आकारा।
तीनों ताप यम का नहीं व्यापे, तहाँ नहीं काल का चारा।।2।।
गूँगा की गति गूँगा जाणे, निःअक्षर निज धारा।
जल में चन्द्र कबहु ना भीजे, वोही पीव हमारा।।3।।
धन "सुखराम " मिल्या गुरु पूरा, मिट गया तिमिर अँधारा।
'ईसरराम" जुगत कर जोया, अक्षय अगम अपारा।।4।।

आतम रस सदा एक इकसारा।
व्यापक वाद कहा नहि जावे, जान अजान ना धारा।।टेक।।
अगम निगम की गम सब थाकी, नहि बेगम विस्तारा।
नाम रूप रंग एक न दरसे, सदा अपेची न्यारा।।1।।
न्यारा भेला बाणी थाकी, नहि चारों का चारा।
अटल अबाणी सबका जाणी, निज साक्षी शुद्ध प्यारा।।2।।
सदा अजात अनामी एकरस, नहि द्वैत विस्तारा।
जीव ईश माया ब्रह्म नाहि, नहि माया प्रस्तारा।।3।।
'उत्तमराम प्रकाश' आप ही, हूँ तू शब्द विडारा।
'रामप्रकाश' है स्वयं प्रकाशी, शुद्ध प्रगोचर वारा।।4।।

रस गगन गुफामें अजर झरै।
बिन बाजा झनकार उठै जहँ समुझि परै जब ध्यान धरै।।
बिना ताल जहँ कमल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केलि करै।
बिन चंदा उजियारी दरसैं जहँ तहँ हंसा नजर परै।।
दसवें द्वारे ताली लागी अलख पुरुष जाको ध्यान धरै।
काल कराल निकट नहिं आवै, काम क्रोध मद लोभ जरै।।
जुगन जुगन की तृषा बुझाती करम भरम अघ ब्याधि टरै।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, अमर होय, कबहूँ न मरै ॥

लखै रे कोइ बिरला पद निरबान।।टेक।।
तीन लोक में यह जम राजा,
चौथे लोक मैं नाम निसान।।1।।
याहि लखत इन्द्रादिक थकि गे,
ब्रह्मा थकि गे पढ़त पुरान।।2।।
गोरख दत्त वशिष्ट व्यास मुनि,
सिम्भू थकि गे धरि धरि ध्यान।।3।।
कहैं कबीर लखै कोइ बिरला,
जिन पायो सतगुरु को ज्ञान।।4।।

आपे खेल खिलाड़ी सतगुरु, आपे लीलाधारी हैं।।
आसमान का तम्बू बनाया जमीं गलीचा डारी है।
चन्द्र सूर्य दो मसाल बनाये तारों की फुलवारी है।
हंस नाम की चौपड़ माड़ी , पासा हरि जग सारी है।
पासा चाहे तिसे जितावे, सारी कौन बिचारी है।
पंजा छक्का नर्द बचावे, बाजी कठिन करारी है।
जिसकी नर्द पक्की घर आवे, सोई सुघड़ खिलाड़ी है।

श्रृंगी ऋषि वन में जा लूड़े शंकर भारों मारी है।
बड़े-बड़े हंकारी लुट गये, रेवत कौन बिचारी है।।
जिनको बल सतगुरू पूरे का तिनका जगत भिखारी है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अब के जीत हमारी है।।

निज साक्षी रूप अपार हैं, सत एक अद्वैत विचारा।।टेक।।
सदा अयोनी अखण्ड अकर्ता, सदा अजन्मा और अमरता।
घटे बड़े नहीं सदा अजरता, निज अनन्य निराधार है।
अविनाशी अचल सुधारा।।1।।
एक दोय कछु कहा न जावे, और न दूजा कहाँ समावे।
मन वाणी की गति विलावे, निज परमानंद अविकार है।
नहीं त्रिगुण माया का चारा।।2।।
संशय भ्रम कलेश न कोई, अनुभव निभव की गति खोई।
अटल अजाया सत चित सोई, नित आनंद का आधार है।
सत व्यापक धन उचारा।।3।।
रामप्रकाश सोर्ड अधिष्ठाना, रामप्रकाश न ज्ञान अज्ञाना।
गुरु शिष्य क्रिया गया न आया, सो रामप्रकाश विचार है।
नहीं ज्योति ज्योत अंधारा।।4।।

संतो सतगुरु अविनाशो ए ।
नाश रहित सदा सुख सिन्धु, अचल प्रकाशी ए।।टेक।।
अटल अगोचर निरालम्ब चेतन, सर्व प्रवासी ए।
बन्धन मुक्त माया नहि भाषे, चौरासी फांसी ए।।1।।
अपना आप सदा शुद्ध महरम आय न जासी ए।
दृश्य प्रपंच सर्व तज फुरणा, दोष विनाशी ए।।2।।
सन्त परमातम ज्ञान परमानन्द, सच्चिदानंद राशी ए।
दे उपदेश सदा निरबन्धन, काटे लख पाशी ए।।3।।

“उत्तराम " भेंट गुरु उत्तम, पाय जिज्ञासी ए।
“रामप्रकाश" अनन्त अधिष्ठाना, आप विलाशी ए।।4।।

प्रेम प्याला गुरु दिया रे साधो।
जा स्यों मस्त मगन हम थिया रे साधो।।
प्रेम भट्ठी तां सतगुरु साकी, सिर साटे हम लिया रे साधो
पीवत प्रेम बिसर गई काया, दिल दर्पण कर दिया रे साधो।
आठों पहर रहूं मतवाला, लाली का रंग लिया रे साधो - चढ़ी
खुमारी उतरे नाहीं, सदा मगन रहूं थिया रे साधो।
प्रेम की महिमा मुख कही न जाए, घट उजियारा किया रे
साधो।
जागी ज्योत राम रंग लगा, भेद भरम मिट गया रे साधो।
प्रेम कला स्यों ये पद पाया, जन्म-मरण दुःख गया रे साधो।
कहत प्रेमी मिटी जब ममता, सदा अमर जुग जिया रे साधो।।

सतगुरू मिले मेरे सारे दुख बिसरे, अंतर के पट खुल गये
री।।टेक।।
ज्ञान की आग लगी घट भीतर, कोटी कर्म सब जल गये री।
पाँच चोर लूटे थे रात दिन, आप ही आप निकल गये री।।
बिना दीप के भया उजाला, तिमिर कहां सब नस गये री।
त्रिवेणी से धार बहत है,अष्ट कमल दल खिल गये री।।
कोटी भानु म्हारे भया प्रकाशा, होरे ही रंग बदल गये री।
अड़सठ तीरथ हैं घट भीतर, आपस में सब मिल गये री।।
शून्य मंडल मैं वर्षा होइ, अमि के कुंड उड़ल गये री।
कहत कबीर सुनो भई साधो, नूर मे नूर, मिल गये री ॥